माय दे, चन्द्र खिलौनहिं लाय ।
कर धरि चिबुक चुँवरि कीरति को, कहति ठुनकि तुतराय ।
हौं मैया चन्दा सँग खेलिहौं, सो मोहिं अति मन भाय ।
तब लौं हौं नहिं माखन खैहौं, जब लौं नाहिं मँगाय ।
तो सों बात न करिहौं, लैहौं, औरहिं माय बनाय ।
कोउ भूषण कबहूँ न पहिरिहौं, दैहौं बसन बहाय ।
जइहौं भाजि सखिन घर, तुम्हरे, घर रह मोरि बलाय ।
मातु हठीली-लली चन्द्रमहिं, दर्पन लाय दिखाय ।
भोरी कुँवरि जानि साँचो तेहि, किलकति पकरति धाय ।
जब 'कृपालु' नहिं पकरि पाय तब, कह कछु मुँह लटकाय ॥

भावार्थ - छोटी-सी किशोरी जी कहती हैं - "अरी मैया ! मुझे चन्द्र खिलौना ला दे ।" किशोरी जी मैया की ठोड़ी पर हाथ रखकर ठुनकर कर तोतली भाषा में कहती हैं, "अरी मैया ! मुझे चन्द्रमा बहुत अच्छा लगता है, मैं तो उसी के साथ खेलूँगी । जब तक तू चन्द्रमा को नहीं मँगा देगी तब तक मैं मक्खन नहीं खाऊँगी और तुझसे बात भी नहीं करूँगी, दूसरी मैया बना लूँगी । कोई गहना कभी नहीं पहनूँगी, सब कपड़े फेंक दूँगी और सखियों के घर में भाग जाऊँगी, तेरे घर में मेरी बलाय रहे ।" लाली के हठ को देखकर मैया ने शीशा लाकर चन्द्रमा को दिखा दिया । भोला भाली किशोरी जी चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को सचमुच ही समझकर किलक-किलक कर उसे बार-बार पकड़ने लगीं । 'कृपालु' कहते हैं जब किशोरी जी किसी प्रकार नहीं पकड़ पायीं तब गुस्से में मुँह लटकाकर कुछ भुनभुनाने लगीं ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्